International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 55-58

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 55-58
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-01-2017
Accepted: 15-02-2017

जय प्रकाश पाल
शोध छात्र, विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रो0 ए0 सी0 कर
शोध–निर्देशक, विभागाध्यक्ष, विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
जय प्रकाश पाल
शोध छात्र, विकृति विज्ञान विभाग, आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

शिशुपालवधम् में निहित ऋतुवर्णन – एक अनुशीलन

जय प्रकाश पाल

प्रस्तावना

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण मनुष्य के शरीर में हुए परिवर्तनों के बारे में कहते हैं कि जिस प्रकार मानव का बाल्यावस्था समाप्त होने के बाद युवावस्था का आरम्भ होता है। तथा जैसे ही युवावस्था समाप्त होती है मनुष्य का शरीर वृद्धावस्था में परिणत हो जाता है।

'देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा' ।[1]

श्रीमद्भगवद्गीता 2/3

इसी प्रकार से ऋतुओं में भी परिवर्तन होता है। एक ऋतु के समाप्त होने के बाद दूसरी ऋतु का आरम्भ हो जाता है। माघादि बारह महिनों में दो–दो मास के एक–एक ऋतु के क्रम से छः ऋतुएं होती हैं– शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमन्त शीत उष्ण और वर्षा के लक्षणों वाली इन ऋतुओं से सोमसूर्य द्वारा काल विभाग होकर दो अयन बनते हैं– दक्षिणायन तथा उत्तरायण, दो अयन मिलकर एक संवत्सर बनता है। पाँच वर्ष का युग होता है, निमेष से लेकर युग तक चक्रवत घूमता हुआ यह काल काल–चक्र कहलाता है–

'कालः चक्रवत् परिवर्तमानः कालचक्रमुच्यते इत्येके' ।[2]

सु0सू0 6

हारित संहिता में सूर्य के दक्षिणायन एवं उत्तरायण का उल्लेख मिलता है–

काल सृजति भूस्तानि कालः संहरते प्रजाः।
कालः स्वपति जागर्ति कालोहि दुरति क्रमः।।[3]

हारित संहिता

पर्यावरण के सन्तुलित रहने पर ही वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म ये ऋतुएं भी सन्तुलित रहती हैं एवं सूर्य की गति के अनुसार दोनों काल जीवन की साम्यावस्था को समरूप बनाए रखती है। संस्कृत साहित्य के आदिकवि कालिदास ऋतुओं से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने ऋतु संहारम् नामक काव्य की रचना करके ऋतुओं के महत्व को और भी ऊँचा कर दिया।

द्रुमाः सपुष्पाः सलिल सपदमम्, स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धि।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते।।[4]

ऋतुसंहारम् 6/8

दिन और रात के स्वामी के रूप में सूर्य एवं चन्द्रमा को स्वीकारा गया है, इन्हीं के प्रभाव से आग्नेय और सौम्यरूप काल का विभाजन किया गया है।
स्वास्थ ही वृद्धि हानि भी इनके निर्दिष्ट है, वायु का योगदान भी ऋतु के परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

योगवहः परं वायं संयोगादुभयार्थकृत दाहहन्त
तेजसा युक्तः शीतकृत सोम संश्रयात्।।[5]

च0चि0अ0 3/38

महाकवि माघ ने शिशुपालवधम् में ऋतुओं का बहुत ही विस्तुत वर्णन किया है–

अथ रिरंसुममु युगपद गिरौ कृतयथा स्वतरूप्रसवश्रिया।
ऋतुगणेन निषेवितुमादधे भुवि पदं विपदन्तकृतम सताम्।।[6]

शिशुपालवधम् 6/1

विपत्ति का नाश करने वाले तथा लोगों के कष्टों को हरने वाले एवम् लोकमंगल का कल्याण करने वाले कृष्ण की रैवतक पर्वत पर विहार करने की इच्छा को देखकर ऋतुएं अपने–अपने विशेष फूलों तथा फलों की शोभा धारण करते हुए धरती पर एक साथ आ पहुँचे। इन ऋतुओं में प्रथम स्थान वसन्त का था। अतः माघ ने सर्वप्रथम वसन्त ऋतु का ही भगवान को दर्शन कराने की बात कही है।

विलुलितालकसंहतिरामृशन्मृगदृशां श्रमवारि ललाटजम्।
तनुतरंगततिं सरसां दलत्कुवलयं वलयन्मरूदाववौ।।[7]

शिशुपालवधम् 6/3

वसन्तऋतुवर्णन

वसन्त ऋतु में मलयानिल मृग के समान नेत्रों वाली रमणियों की केशराशि को हिलाता हुआ, उनके ललाटपर छायी हुई पसीनों की बूँदों को सुखाता हुआ, सरोवरों में छोटी–छोटी लहरियों को उठाता हुआ तथा कमलों को विकसित करता हुआ मलयानिल बहने लगा। बसन्त ऋतु में पलाशों में नये–नये पत्ते निकल आते हैं। विविध प्रकार के पुष्पों से चारों ओर के परिदृश्य सुवासित होने लगते हैं। पुष्प ऐसे सुशोभित होते हैं जैसे स्वर्ण हों तथा आम के वनों की भी शोभा सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। मनुष्य एवं वृक्ष ही नहीं बल्कि जीव–जन्तु, भ्रमर आदि भी बसन्त में गुंजार करने लगते हैं–

प्रियतमाप वपुर्गुरुमत्सरच्छिदुरयाऽदुरनाचितमंगना।।[8]

शिशुपालवधम् 6/8

अर्थात् वसन्त ऋतु में कोयल पक्षी की प्यारी कूक सुनकर कोई भी रसिक क्षणभर के लिए ठहर ही जायेगा, कामिनी स्त्रियाँ तो इस मधुर पुकार को सुनकर द्वेष आदि को दूर ही त्यागकर अपने प्रेमी के बिना बुलाये ही अपना अंग उन्हें अर्पित कर देती हैं। यह सब वसन्त के प्रभाव के कारण ही सम्भव हो पाता है।

आचार्य सुश्रुत भी बसन्त ऋतु का उल्लेख कुछ इसी प्रकार से किया है–

दिशो बसन्ते विमलाः काननैरूपशोभिताः, किं शुकाम्भोज बकुल चूता शोकादि पुष्पितै।
कोकिलाषट्पदगणैरूपगीता मनोहराः, दक्षिणानिलः संवीताः सुमुखाः पल्लवोज्जवला।।[9]

सुश्रुत संहिता 6/28–29

वसन्त में दिशाएं निर्मल हो जाती हैं वनों में ढ़ाक, बकुल, आम, अशोक आदि वृक्षों के सुवासित रूप तथा आनन्द देने वाली शोभा से युक्त कोमल पत्तों एवं श्रृंगार की हुयी दक्षिण वायु बहती है।

ग्रीष्मऋतुवर्णन

वसन्त की समाप्ति के बाद ही ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ हो जाता है, ग्रीष्म में सूर्य की किरणें गर्म हो जाती हैं, हवा का रूख उष्णता प्रदान करते हुए संतप्त करने लगता है। ग्रीष्म में मतवाले भ्रमर कोमल कलियों को विकसित होते हुए देखकर प्रसन्नता का अनुकरण करने लगते हैं। निजवधूओं के श्वासों को पवन के द्वारा उनके अन्तः में काम के प्रवृत्ति को अत्यधिक व्याकुल कर देती है तथा ग्रीष्म से पीड़ित लोग चन्दन, स्नान आदि के द्वारा अपने अंगों को कोमल तथा सुखद बनाते हैं, जिससे उन्हें ग्रीष्म का अनुभव न हो सके।

'सरसचन्दरेणुरक्षणं विचकरे च करेण वचोरूभि।'[10]

शिशुपालवधम् 6/24

सुश्रुत संहिता में कहा गया है कि ग्रीष्म की उष्णता के कारण पक्षी आदि व्याकुल हो जाते हैं मृग पियासाकुल होकर भटकने लगते हैं। ग्रीष्म में सभी वृक्ष, लता, तृण आदि नष्ट होने लगते हैं–

'ध्वस्तवीरूतृणलता विपर्णकितपादपाः'[11]

सु0सं0 6/31

कालिदास भी ऋतुसंहारम में ग्रीष्म ऋतु का वर्णन कुछ इसी प्रकार किया है। सूर्य अत्यधिक तपता है। सभी चन्द्र प्रकाश की प्राप्ति की अभिलाषा करते हैं, सायंकाल की छवि मनोरम व तीक्ष्ण पवन गर्द भी उड़ता है। घास–फूस आदि नष्ट हो जाते हैं। पशु–पक्षी भी प्रताड़ित होने लगते हैं–

'प्रचण्ड सूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षत वारिसंचयः'[12]

ऋतुसंहारम् 1/1

वर्षाऋतुवर्णन

ग्रीष्म की समाप्ति के बाद वर्षा ऋतु का आगमन होता है, वर्षाकाल के प्रारम्भ होते ही चारों तरफ हरियाली दिखने लगता है। बिजली की चमक, फूलों का खिलना, नायक–नायिकाओं का अभिसरण करना तथा बादलों का मानो इन्द्रधनुष धारण करना बहुत ही मनोरम होता है–

द्विरददन्तवलक्षमलक्ष्यत स्फुरितभृंगमृगच्छवि केतकम्।
घनघनौघविघट्नया दिवः कृशशिखं शशिखंडभ्मिवच्युतम्।।[13]

शिशुपालवधम् 6/34

कवि माघ वर्षा ऋतु के आगमन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हाथी के दांत के समान शुभ वर्ण एवं मृगचिन्हरूपी भ्रमते हुए भ्रमरों से युक्त केतकी के पुष्प इस प्रकार दिखलाई पड़ रहे हैं मानों सघन मेघों के संघर्षण से आकाश से नीचे गिरे हुए चन्द्रमा के छोटे–छोटे टुकड़े हों।

महाकवि भवभूति भी लव और चन्द्रकेतु के युद्ध में वाणों की वर्षा को देखकर तुषार (हिम) की वर्षा जैसा बताया है। इससे भवभूति की वर्षा ऋतु के प्रति प्रेम की पुष्टि होती है।

मुपरि शरतुषारं कोऽप्ययं वीरपेतः।[14]

उत्तररामचरितम् 5/2

शरदऋतुवर्णन

शरद ऋतु में सूर्य अपने किरणों से धरती के अन्धकार तथा मेघों के अन्धकार को दूर कर देते हैं तथा मोर की ध्वनि के स्थान पर हंसों की ध्वनि जनमानस के चित्त को आह्लादित करने लगती हैं। पराग से युक्त लाल रंग की केशर अतिव मनोहर लगते हैं रमणियाँ अपने मुखार बिन्दू की शोभा से किस पुरुष को उत्कण्ठित नहीं करती, धान आदि की फसल भी अश्विन महिने की शोभा को चारचाँद लगा देती है–

विगतसस्यजिघत्समघट्टयत्कलमगोपवधूर्न मृगव्रजम्।
श्रुततदीरितकोमलगीतकध्वनिमिषेऽनिमिषेक्षणमग्रतः।।[15]
शिशुपालवधम् 6/49

अश्विन के महिने में धान की रखवाली करने वाली स्त्रियाँ अपने आगे खड़े हुए हरिणों को (डराकर) नहीं भगाती बल्कि वो हरिण निर्मिमेष नयनों से धान को खाने की इच्छा त्याग कर स्त्रियों द्वारा कोमल स्वर में गाये जाने वाले गीतों की मनोहर ध्वनि को सुनने लगते हैं।

शरद ऋतु का उल्लेख करते हुए संस्कृत सम्राट बाणभट्ट कादम्बरी में कहते हैं– चाण्डाल कन्या का नेत्र बड़ी–बड़ी तथा श्वेत कमल के समान प्रफुल्लित थी जिससे वह शरद ऋतु के समान प्रतीत हो रही थी–

'शरदमिव विकसित पुण्डरीक लोचनम्।'[16]
कादम्बरी कथा

हेमन्तऋतुवर्णन

इस ऋतु में वायु अत्यन्त कोमल हो होकर पीड़ित करने वाली तथा ठण्ड भी कष्ट दायक हो जाती है। हाथी को डुबा देने वाली गहरी नदियाँ भी बर्फ बन जाती है। शीत के कारण मनुष्य, पशु, जीव–जन्तु आदि व्याकुल हो जाते हैं। नायिकाएं जो रोष के कारण अपने प्रियतम के पास नहीं रूकती थीं, वहीं अब शीत से कांपती हुयी अपने उसी प्रियतम के पास हंसती हुई बड़ी शीघ्रता से जाकर लिपट जाती हैं तथा उनको छोड़ना नहीं चाहतीं, उनके अन्दर काम की भावना को हेमन्त उत्पन्न कर देता है तथा वह कामुक की तरह आचरण करने लगती हैं–

हिमऋतावपि ताः स्मः भृशस्विदो युवतयः सुतरामुपकारिणि।[17]
शिशुपालवधम् 6/61

सुश्रुत संहिता में हेमन्त ऋतु के वर्णन में कहा गया है कि वायु उत्तर दिशा की ओर चलती हुई धूल, धूम, कोहरा से व्याप्त होती है। सूर्य भी तुषार से आच्छादित, जलाशय बर्फ से आच्छादित होते हैं। जीव–जन्तु, कौवा, गैंडा, मेढ़क, भैंसा एवं हाथी प्रसन्न होते हैं। पुष्पों में लोध्र, प्रियागु, पद्मकेशर खूब खिलते हैं–

वायु वात्युत्तरः शीतो रजो धूमाकुला दिशः, छन्नस्तुषारैः सविता हिमानद्धा जलाशयः।
दर्पिता ध्वाक्षखड्गाह्वमहिषोरभ्रकुंजराः, शेध्रप्रियंगपुन्नगा पुष्पिता हिमसाह्वये।।[18]
सू0सं0 सू0अ0 6/23–24

हेमन्त में केवल मनुष्य ही नहीं वरन् पशु–पक्षी आदि भी व्याकुल हो जाते हैं, नदियों का जल जम जाना, पक्षियों के कलरव, पवन वेग का कम्पायमान कामीजनों को अत्यधिक संतप्त करता है।

कालीदास ऋतुसंहारम् में क्रौंचपक्षी के गीतों से व्याप्त बरफयुक्त हेमन्त का वर्णन किया है–

क्रौंचनादोपगीतः प्रदिशतु हिमयुक्तः काल एषः सुखं वः।[19]
ऋतुसंहारम् 4/19

शिशिरऋतुवर्णन

शीतकाल के समाप्ति के बाद शिशिर ऋतु का आगमन होता है। शिशिर ऋतु में सूर्य की किरणें तेज नहीं होती, उसी के सन्दर्भ में कवि माघ का यह वर्णन बहुत ही रमणीय है–

कुसुमयन्फलिनीरलिनीरवैमैदविकासिभिराहितहुंकृतिः।
उपवनं निरभर्त्सयत प्रियन्वियुवतीर्युवतीः शिशिरानिलः।।[20]
शिशुपालवधम् 6/62

वन की प्रियंगु लताओं में फूल खिलाने वाली एवं मद् से उल्लसित भ्रमरियों के गुंजारों में हुँकार करने वाली शिशिर ऋतु की वायु ने कोप के कारण प्रियतमों से वियुक्त रहने वाली युवतियों को मानो खूब तर्जना दी।

शिशिर में लोध्र के फूलों की खूशबू लोगों के मन को प्रफुल्लित एवं रमणियों के हृदय को प्रेम से संचरित कर देता है। श्वेत कुन्दलता अपने महक से वातावरण को सुवासित करता है।

महाकवि कालिदास भी शिशिर ऋतु का वर्णन करते हैं–

कण्ठेषु स्खलितं गतेऽपि शिशिरे पुंस्कोकिलानां रूतं।[21]
अभिज्ञान. 6/4

शीतकाल के समाप्त होने पर भी कोयलों की ध्वनि मानो रूक गयी हो।

ऋतु वर्णन में करने में माघ बहुत ही कुशल थे, रावण की राजधानी में सभी ऋतुओं का वर्णन एक ही साथ कर देना इस बात का प्रमाण है–

तपेन वर्षाः शरदा हिमागमों बसन्तलक्ष्म्या शिशिरः समेत्य च।
प्रसूनक्तृप्तिं दधतः सहर्तवः पुरेऽस्य वास्तव्यकुटुम्बितां ययुः।।[22]
शिशुपालवधम् 1/66

अर्थात् रावण की राजधानी में सदा ग्रीष्म के साथ वर्षा, शरद के साथ हेमन्त तथा शिशिर के साथ वसन्त ऋतु आकर कुसुमों की प्रभूत सम्पत्ति लिए हुए, निवास करते थे और उसके कुटुम्बी बन गये थे।

उपसंहार

अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि प्रत्येक ऋतु में अन्य दूसरे ऋतु का प्रभाव बना रहता है (शतपथब्राह्मण 7/4)[23] में उल्लेख है कि यद्यपि आरम्भ में ऋतुओं का भिन्न–भिन्न रूप था, अन्त में उनमें समानता आ गयी। संस्कृत साहित्य के प्राचीनकाल से लेकर आधुनिककाल तक के विभिन्न काव्य, गद्य, खण्डकाव्य, संहिता आदि में ऋतुकालीन वर्णन विस्तृत ढंग से देखने को मिलता है।

महाकवि माघ अपने एक मात्र महाकाव्य शिशुपालवधम् में छः ऋतु (वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर) का वर्णन करते हुए केवल मनुष्य, जीव, जन्तु तथा पशु–पक्षियों का ही नहीं वरन् पर्वत, नदी आदि का भी ऋतुओं के अनुसार वर्णन किया है। फलतः पुष्प, पवन आदि का वर्णन कवि के ऋतुकालीन विविधता को स्पष्ट करता है तथा स्नान वर्णन, चन्दन लेपन, कामुकता की प्रवृत्ति, प्रेम प्रवृत्ति आदि मनोवृत्ति को भी कवि ने ऋतुओं के अनुसार बोध कराया है। जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि माघ एक ऋतुप्रेमी कवि सिद्ध होते हैं।

सन्दर्भ–सूची

1. श्रीमद्भगवद्गीता 2/3।
2. सुश्रुत सूत्र 6।
3. हारित संहिता।
4. ऋतुसंहारम् 6/8।
5. च0चि0अ0 3/38।
6. शिशुपालवधम् 6/1।
7. शिशुपालवधम् 6/3।
8. शिशुपालवधम् 6/8।
9. सुश्रुत संहिता 6/28–29।
10. शिशुपालवधम् 6/24।
11. सुश्रुत संहिता 6/31।
12. ऋतुसंहारम् 1/1।
13. शिशुपालवधम् 6/34।

14. उत्तररामचरितम् 5/2।
15. शिशुपालवधम् 6/49।
16. कादम्बरी कथा।
17. शिशुपालवधम् 6/61।
18. सुश्रुत संहिता सूत्र स्थान 6/23–24।
19. ऋतुसंहारम् 4/19।
20. शिशुपालवधम् 6/62।
21. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 6/4।
22. शिशुपालवधम् 1/66।
23. शतपथब्राह्मण 7/4)